गाय–भैंसों में प्रजनन सम्बंधी समस्यायें व निवारण

कारण

- हार्मोन्स का असंतुलन
- अत्यधिक मात्रा में पेट में कृमि होना
- खनिज लवण एवं अल्प खनिज तत्वों की शरीर में कमी
- जनन अंगों की बनावट में जन्मजात विकार
- प्रारम्भिक अवस्था से ही असंतुलित या अपूर्ण पशु आहार
- संक्रामक कारण

लक्षण

- पशु का समय पर मद/हीट में न आना
- बार बार हीट में आना एवं ग्याभिन नहीं होना
- बच्चेदानी का बाहर आना तथा मैला गिरना
- प्रसव/ब्यानें के बाद जेर न गिरना

बच्चेदानी का बाहर आना

ब्यानें के बाद जेर न गिरना

बचाव व उपचार

- जन्म लेते ही बछड़ी को माँ का पहला गाढ़ा दूध (खीस) एक घण्टे के भीतर अवश्य पिलायें।
- एक सप्ताह की उम्र होने पर पहली बार पेट के कीड़े मारने की दवा पशुचिकित्सक की सलाह से देनी चाहिए।
- बछड़ी को अपने वजन का 1/10 वजन के बराबर दूध पहले महिने में रोजाना अवश्य पिलायें।
- बाद में प्रतिदिन एक किलोग्राम दूध 90 दिन तक पिलायें।
- संतुलित पशु आहार व खजिन लवण मिश्रण बछड़ी को नियमित रूप से खिलायें।
- हार्मोनल असंतुलन व जनन अंगों की जन्मजात विकृति के लिए पशुचिकित्सक से जाँच करवायें तथा सलाह अनुसार उपचार करावें।
- बच्चेदानी व मादा जनन अंगो के संक्रमण होने पर बच्चेदानी के स्त्राव की प्रयोशाला में जाँच करवाकर प्रभावी दवा से उपचार करायें तथा ठीक होने तक प्रजनन न करवायें।

पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग
स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पी.जी.आई.वी.ई.आर.)
(राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय)
एन.एच. 11, आगरा रोड़, जामडोली, जयपुर-302031